92 P
453

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1248/10121

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 453

16-1

891.431
J328S

❀ वन्देमातरम् ❀

जवाहिर सन्देश

(सत्याग्रह शिविर रुद्रपुर गोरखपुर स्वीकृत)

भारत की नर नारियाँ मानो गाँधी आदेश।
प्यारे मन से बांचिये गान्धी सन्देश॥

प्रकाशक—पं० रामदास पाण्डेय मौजा सोनबरसा
पोस्ट रुद्रपुर जिला गोरखपुर की आज्ञानुसार
गोरखपुर प्रिन्टिङ्ग प्रेस में मुद्रित।

प्रथमवार ६०००] [कीमत -)

सन् १९३० ई०

(91) ✗8
IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
23 MAY 1931

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 453
Date 10.12.71
GOVT. OF INDIA

❀ वन्दे मातरम ❀

जवाहिर संदेश

(१) वरदान

भगवान् ! ये ही वरदान मिले ।
हर जूं हर जगह स्वराज्य रहे ॥
हिन्दू पूजन में मस्त रहे ।
मुसलिम की भली नमाज रहे ॥
घर घर में धूम मचे चरखे की ।
पर कोई न दस्त नदाज़ रहे ॥
गाढ़े का कफन हो बदन पर पड़ा ।
वन्देमातरम् अलफाज रहे ॥

(२) गलेका हार

हम गरीबों के गले का हार वन्देमातरम् ।
छीन सकती है नहीं सरकार वन्देमातरम् ॥
सर चढ़ा के सर में चक्कर उस समय आता जरूर ।
कान में पहुँची जहां झनकार वन्देमातरम् ॥
हम वही हैं जो कि होना चाहिये इस वक्त पर ।

आज तो चिल्ला रहा संसार वन्देमातरम् ॥
जेल में चक्की घसीटूं भूख से हूं मर रहा।
इस समय भी कह रहा बे जार वन्देमातरम् ॥
डाक्टरों ने नब्ज देखी सर हिलाकर कह दिया।
हो गया इसको तो अब आज़ार वन्देमातरम् ॥
ईद होली और दशहरा सबरात से भी सौगुना।
है हमारा लाड़ला त्योहार वन्देमातरम् ॥
जालिमों का जुल्म भी काफूर सा उड़ जायेगा।
फ़ैसला होगा सरे दर वार वन्देमातरम् ॥

(३) राष्ट्रपति जवाहिरलालजी

भारत का डंका आलम में, बजवा दिया वीर जवाहिर ने।
स्वाधीन बनो स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहिर ने ॥
वह लाल जो मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को हठ करके, जगवाया वीर जवाहिर ने ॥
अंगरेज़ों की मृगतृष्णामें, भूले थे भारतवासी सब।

पूरी आजादी को मन्तर, सिखलाया वीर जवाहिर ने ॥
दे दे स्पीचें जिन्दा दिल, कमजोरी दूर भगा दी सब ।
रग रग में खून आज़ादी का दौड़ाया वीर जवाहिर ने ॥
हैं नीति कुशल नीतिज्ञों में, छानी है खाक विदेशों की ।
समता आज़ादी का रस्ता, दिखलाया वीर जवाहिर ने ॥
पूंजी पति मालगुजार जुलुम करते रैयत मजदूरों पर ।
धीरज वन दीनन का संगी, बन्धवाया वीर जवाहिर ने ॥
हिन्दू मुसलिम ईसाई सिख, जैनी वो पार्सीभाई हैं ।
ऊंचा नीचा का भेद, जटिल मिटवायो वीर जवाहिर ने ॥
बिजली सी आग धधकती है, आजादी की उसके दिलमें ।
जिससे युवकों के दिलपर धाक जमाया वीर जवाहिर ने ॥
गाँधी जी आशीष दे बोले, खुद मुन्शी हूगाँ मै तेरा ।
तब सेहरा राष्ट्रपती का सिर, बन्धवाया वीर जवाहिर ने

(४) भारतमाता ।

अब देशी पहिनों जी, भाइयो फैशन को छोड़ के ।
है विनती करती जी जी, भारतमाता कर जोड़के ॥

❋ शेर ❋

जो तुम पहनो खद्दर भाई एक पंथ दो काज ।

एक तो पैसा घर में बचे दूजे हो भारत आजाद ॥
अब खद्दर पहिनों जी न बैठो मुखड़ा मोड़के ॥ अब ॥
जो तुम समुझो खद्दर चुमतो न बनते छैलछबीले।
भारत वर्ष के अन्दर कपड़े बनते रंग रंगीले ॥
पर पहनों देशी जी लन्दन से नाता तोड़ के ॥ अब ॥
भारत वर्ष के बच्चे भूखों मरते रुदन-मचाते ॥
इङ्गलैन्ड के कुत्ते यारो दूध व विसकुटखाते ॥
हाय। कुछ न छोड़ा जी, जालिम ले गये सब लूट ॥ अब ॥
के हाय कुछ न छोड़ा जी ॥

५ राष्ट्री झंडा।

बिजयी विश्व तिरंगा प्यारा।
झंडा ऊचा रहे हमारा ॥

सदा शक्ति वरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हरषाने वाला, मातभुमि का तन मन सारा ॥झं
स्वतंत्रत के भीषण रण में, लख कर बढ़े जोश क्षण २ में।
कांपे शत्रू देख कर मन में, मिट जाय भय संकट सारा ॥झं
इस झंडेके नीचे निर्भय, ले स्वराज हम अविचल निश्चय।

बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रत हो ध्येय हमारा ॥ भ ॥
आवो प्यारे वीरो आवो, देश धर्म पर बलि बलि जाओ ।
एक साथ सब मिलकर, गावी प्यारा भारत देश हमारा ॥भ
इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे ।
विश्व मुग्ध करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥

(६) आज़ादी के दीवानोंका

आओ बीरो मर्द बनो अब जेल तुम्हें भरना होगा।
सत्याग्रहके समर क्षेत्रमें आ आकर डटना होगा ॥ १ ॥
है आज जमाना ऐ बीरो आजादीके दीवानों का।
निकल पड़ो अब बनकर सैनिक भय न करो कछुप्राणोंका ॥ २ ॥
सूर लड़ाके मरदाने हो पैर हटाना कभी नहीं।
मरते मरते माता का अब कर्ज अदा करना होगा ॥ ३ ॥
वक्त नहीं है ऐ बीरो अब गाफिल होकर सोने का।
दौड़ चलो मैदानों में माता का दुःख हरना होगा ॥ ४ ॥
याद करो माता का तुमने बहुत दुग्ध है पान किया।
दुग्ध दिये की लाज बहादुर किसी तरह रखना होगा ॥ ५ ॥
शेर मर्द हो बीर बाँकुड़ा याद करो कर्तव्यों का।
मातृ वेदी पर हंसते हंसते कट कट के मरना होगा ॥ ६ ॥

(७) अभिलाषा ।

बतायें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं ।
गुलामी से होना रिहा चाहते हैं ॥
अगर वह न अपनी गुलामी से छोड़े ।
तो फिर जेल की सजा चाहते हैं ॥
रहें फूस व खपैरल के घर में क्यों हम ।
उसी पक्के घर में रहा चाहते हैं ॥
नहीं घर के खाने में अब जायका है ।
वहां का भी लेना मजा चाहते हैं ॥
वह तीरथ है वाँ कृष्ण पैदा हुये थे ।
वहीं चल के पूजा किया चाहते हैं ॥
दिवाला निकल जाय जेलों का एक दम ।
उसे इस कदर हम भरा चाहते हैं ॥
वह नाहक डराते हैं हम को सजा से ।
खुशी से उन्हे सर दिया चाहते हैं ॥
अजी ऐसे जीने पै सौ बार लानत ।
वतन के लिये मरा चाहते हैं ॥

(८) गजल स्वर्गवासी श्री यतीन्द्र नाथदास।

क्या लिखे आज़ाद हो कर हम कहानी दास की ।
कैद ही में कट गई सारी जवानी दास की ॥
चलते फिरते खतम हो यो जिन्दगानी दास की ।
सुबह पीरी बन गई शामे जवानी दास की ॥
आस माने पीर भी चक्कर में है गर्दिश में हैं ।
रङ्गलाई देखिये क्या नौजवानी दास की ॥
पुर असर है, दर्द में डूबी हुई है किस कदर ।
दिल अगर है तो सुनो दिलसे कहानी दास की ॥
फाका मस्ती में भी मस्तो की तरह वो मस्त था ।
गोया हिम्मत की नमूना थी जवानी दास की ॥
मिट नहीं सकती 'मिटाए गर्दिशे हप्त आस्माँ ।
अन्त तक कायम रहेगी यह निशानी दास की ॥
खुल कर ऐ "विसमिल" यही दुनिया को भि कहना पड़ा ।
देश सेवा के लिये थी जिन्द गानी दास की ॥

(९) स्वतन्त्र भारत !

आहाहा गाँधीके मुखसे निकला स्वतंत्रभारत स्वतंत्रभारत ।

सचेत होकर सुनो सभी ने, स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ॥
हर एक घर में मची हुयी है, स्वतंत्र भारत स्वतन्त्र भारत।
हर एक बच्चा पूकारत है, स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ॥
वना के कुटिया स्वतन्त्रता की सपूत जैलो में रम रहे है।
निकल के देखेंगे वे तपस्वी, स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ॥
कुमारी हिमगिरिअटक कटक में बजेगा डंका स्वतन्त्रता का।
कहेगें तैतीस करोड़ मिलकर स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ॥

(१०) सुधार निसा खोरवा।

भारत के भाईयों से बार बार कहतानी।
त्याग देहू पीअल शराब निसखोरवा ॥
धन नुकशान करे गांजा और भांग पियें।
धरम ईमान सब खोवे ताड़ी खोरवा ॥
नाहीं रहे पइसा तो घरे तकरार करें।
जोरुआ से करजा मँगावें निसखोरवा ॥
करजा जो माँगे नाहीं मिले तब जोरुआस।
मेहरी के गहना बेचावें निसखोरवा ॥
रूपया तो लेई कर गइले ताड़ी खनवाँ में।

बाबू बाबू कहि के चिल्लात निसखोरवा ।।
घट घट पियै लागै छन के कलेजवा में ।
थु थु करके आँख मलकावै निसखोरवा ।।
नशा जब होइ गइलैं अक बक बोले लागैं ।
लात जूता मिले जलपान निसखोरवा ।।
सड़क में चलताड़े डग मग पाँव हिलैं ।
चारों ओर झगड़ा मचावैं निसखोरवा ।।
धरलें सिपाही तब हन्टर के मार मारैं ।
बाप बाप कहि गोड़ पड़ैं निसखोरवा ।।
रात दिन दरुआमें रहत बेहाल तू तो ।
जोरुआ तो आर संग फँस निरखोरवा ।।
लाज औ धरम के तो सोच नाहीं मनवांमें ।
सबके त ससुरा करवले निसखोरवा ।।
मुहवाँ त गमके तोरा भेड़िया के मूत जैसे ।
शरम न लागे हाय पीये निसखोरवा ।।
जोरू तोरा ताना मारे' भडुआ' गुलाम कहे
नाहीं मिले अन भर पेट निसखोरवा ।।

धिक तोरा माई बाप धिक तोरा गुरुजीके ।
लाख धिक गाँव वह जहां भइले निस ०
भारत कंगाल भयल उलटी चलनियां से ।
काहे नाहीं ज्ञानमुनि होवें निसखोरवा ॥
दूध दही छोड़ कर दरुआ से पेट भरे ।
कमियाँ कुचलिया कहावें निसखोरवा ॥
धन नुकशान करें ताड़ी और शराब पिये ।
धरम इमान सब खोवें निसखोरवा ॥
कहें "रामदास" निशा खोर वों से हाथ जोड़।
छोड़ि देहु पिअल शराब निशा खोरवा ॥
बार बार कर जोड़ी तोहरा से कहताड़ी ।
आज से कसम खाई जाओ निसखोरबा ॥

लाहौर लाजपत काण्ड

प्यारे लालाजी स्वर्ग सिधारे हरे ।
भारत नैया है हाथ तुम्हारे हरे ॥
रायल कमीशन आने वाला था सुनो लाहौर में ।
मैदान आजनता सकल कहने लगी एक सौर में ॥

रायल लौटोन काम यहां रे हरे ॥ प्यारे०

लाजपत मोती जवाहर मालवी जी संग में।
ले चले मातमका झण्डा शांति मै रण रंग में ॥
एकाएक पुलिस आके घेरा हरे ॥ प्यारे लाला

कहते हैं पाजी न सुनते छोड़दो मैदान को।
मान लो मेरा कहा गर चाहतुम्हें प्रान को ॥
न तो डण्डे लगाऊँ दो चार हरे ॥ प्यारे०

है सब हो पल्टन पुलिस भाई हमारे देश के।
हम पर करते डण्डेबाजी बात सुन अङ्गरेज के ॥
जनता जो थी सबही पिटाये हरे ॥ प्यारे०

कितने के सर फट गये कितने कलेजा थाम कर।
कितने भूमी पै गिरे घोड़ा दौड़ाया जान कर ॥
लाजपत की मृत्यु से पञ्जाब सूना हो गया।
हम समझते देश सारा ही अंधेरा हो गया ॥
कैसे न्यायी हैं राजा हमारे हरे ॥ प्यारे०
धारो धीरज लालाजी अइहै हरे ॥

—*——*—

महात्मा गांधी की दो बातें।

प्रिय सज्जनो!

महात्मा गांधी जी का कहना यह है कि—"यदि आप स्वयम् सेवकों में नाम लिखा कर देश-सेवा नहीं कर सकते तो आप चरखा चलावें। चरखाही आप का स्वराज्य दिला देगा।" आप इसबातको सुनकर आश्चर्य करते हैं कि चरखा स्वराज्य कैसे दिला सकता है? अस्तु हमारी निम्नलिखित बातों पर बिचार करें।

बिलायतमें रहने वाले विशेष मनुष्य आपके लिये अथवा आप के देश के लिये कपड़ा बुनने के काम में ही लगे हैं। ऐसी हालत में जब की आप अपने देश के लिये कपड़े का प्रबन्ध कर लेंगे तो बिलायत की विशेष जनता जो कि कपड़े का व्यवसाय कर रही है बह वहां की पार्लमेन्ट और भारत सरकारकोआपकेदेशको स्वराज्य देनेके लिये बाध्य करेगी।

यदि ऐसा न हुआ तो आपके देशका ६६ करोड़ रुपया प्रति वर्ष आपके देश ही में बचता रहेगा और कुछ दिन में आपका देश पैसों से दुखी न दिखलाई पड़ेगा। अब बिचार करें "आप एक जोड़ा धोती बिलायती ५) की खरीदते हैं जिसमेंज्यादःसे ज्यादः आधसेर रूई लगती है। आधसेररूई

का मूल्य ।) हुआ ४॥।) आपको रुई कातकर कपड़ा बुननेका देना पड़ता है। यह ४॥।) आप कहां से देते हैं ? यह सवाल बनियेसे किया जावे तो बनिया कहेगा कि हम अपनी दूकान से पैदा करके देतेहैं, वकील कहेगा हम वकालत करके लाते हैं, हलवाई कहेगा हम अपनी दूकान से पैदा करते हैं. लोहार कहेगा हम मजदूरी करते हैं। परन्तु बनिये, वकील, हलवाई और लोहार इत्यादि के पास पैसा कहां से आया, किसने दिया, फिर देने वाले को किसने दिया ? इस प्रकार से यदि पैसा पैदा होने की जड़ का पता लगाया जावे तो अन्त में यही उत्तर प्राप्त होगा कि—हिन्दुस्थानमें जो खेती होती है अथवा जो अन्न उपजता है यही पैसे की जड़ है और यहींसे पैसा सब प्राणी मात्र को प्राप्त होता है।" अस्तु ४॥।) कपड़े की बुनाई का जो आपके कमर में से निकल जाता है। यह आपके अन्न में से निकल जाता है। यदि आप अपने कपड़े की जरूरत पूरी करलेंगे तो यह ४॥।) आपके देश निवासी किसी के ही पास बचेंगे। जो लोग पैसे वाले हैं, वे चार तरह के साग बनाकर खातेहैं। जिनके पास पैसा नहीं है वह चार तरह के साग कैसे खावें ? यदि गरीबोंके पास पैसे होवें तो वे क्या चार तरहके साग खाना नहीं जानते यदि गरीब

भी चार तरहके साग खाने लगेंगेतो साग बेचने वाले शीघ्र अमीर होकर चार अच्छे कपड़े पहनने लगेंगे तो क्या कपड़े वाले मालदार न होंगे। कपड़े वाले मालदार होकर अपना गृहस्थी के लिये अच्छे २ जेवर बनवाने लगेंगे तो क्या सोना चांदी बनाने और बेचने वालों की आमदनी न बढ़ेगी ? इसी प्रकार प्रत्येक व्यवसायसे प्रत्येक व्यक्तिका सम्बन्ध हैं यदि देश में पैसा हो तो प्रत्येक आनन्द पूर्वक समय व्यतीत कर सकता है। अस्तु उठो और चेतो इस कपड़ेके रास्ते से प्रत्येक व्यक्ति कंगालहोता जारहाहै। इसे रोकनेका प्रयत्न करोयदि आधघंटे प्रतिदिनभी आपचरखा कातेंगे तो छः मासमेंजितने कपड़े आपकेखर्च होतें हैं उतना कपड़ा अपनेहाथके कतहुये सूत से छः मास बाद बनवाकरखर्चकरसकते हैं यहजरूर होगाकि अभी आप विलायतके समान महीन और चिकना सूत नहीं कात सकेंगे परन्तु दिन प्रति दिन आपका अभ्यास बढ़ता जावेगा औरआप कुछ दिनों बाद अच्छेसे अच्छा और महीन से महीन सूत बनाने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। यदि इस पर भी आप सचेत न हुए तो हम अपने को आपके समझाने में और कायर समझेंगे।

शुभ संदेश।

काल करे सो आज करे आज करे सो अब।
पल में परलय होयेगी बहुरि करोगे कब॥

महाशयों! आप की सेवा में ४ किताबें और छप गई और पांचवीं नईदुनिया १०वीं बार छप रही है।
शीघ्रता से प्रचारार्थ तथा निज पढ़ने के लिये मँगाइये।

(१) स्वराज्य का आल्हा की० -)
(२) गांधी टोपी १ पैसा
(३) माया का लोभी बाप १ पैसा
(४) हम घर २ नमक बनायेंगे की० १ पैसा

नोट—थोक मगाने से स्वाराज्य का आल्हा २॥) सैकड़ा। नई दुनिया २॥) और गांधी टोपी ॥।) सैकड़ा। नमक वालाभी ॥।)सैकड़ा। जवाहिर सन्देश ३=) सै०

(२) जो लोग प्रचार के ख्याल से ज्यादा मगानेंगे उन्हें और किफायत से दीजावेंगी।

पता–पं० राजनन्दन प्रसाद त्रिपाठी बुकसेलर,
तहसील देवरिया गोरखपुर यू० पी०:।

नोट—१०० कापी से कम कोई किताब नहीं भेजी जायेंगी। डाक महसूल अलग।

बिनीत रामदास पांडे

मुद्रक—बाबू शिवचरनलाल गुप्त गोरखपुर।